अंक ४२ ★ अक्टूम्बर-२०१८

# श्री स्वामिनारायण

मूल्य रु.५०००



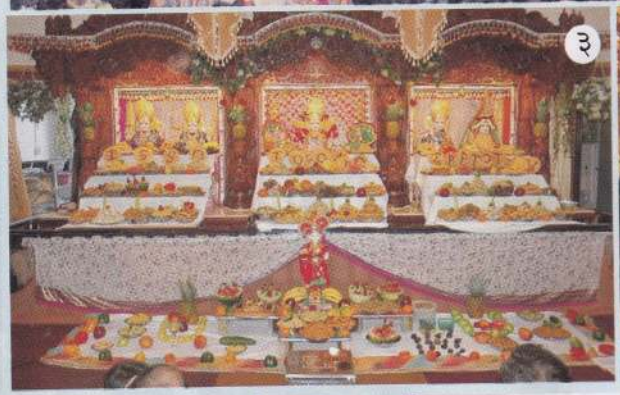
## जलझीलणी एकादशी की उत्सव यात्रा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.



















( १ ) अपने श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर करांची ( पाकिस्तान ) में श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाते हुये हरिभक्त । ( २ ) करांची ( पाकिस्तान ) अपने मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव के समक्ष श्री गणपति उत्सव । ( ३ ) टोरन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन । ( ४ ) अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर क्रोली ( यु.के. ) श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुये शा.स्वा. विश्ववल्लभदासजी तथा नरनारायण स्वामी । ( ५ ) शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में जलझीलणी उत्सव के समय संत तथा हरिभक्त ( ६ ) कर्मशक्ति मंदिर ( अहमदाबाद ) में समूह महापूजा के प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।




# श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ अंक : ४२ अक्टूम्बर-२०१०


## अ नु क्र म णि का


| | | |
|---|---|---|
| १. | अस्मदीयम् | २ |
| २. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा | ३ |
| ३. | प्रदक्षिणा विधि | ४ |
| ४. | भरतखंड में श्री नरनारायणदेव की उपासना | ६ |
| ५. | विधवा कुं स्पर्शत नहीं करत, न आत्मघात | ७ |
| ६. | नियमों की दृढता | ८ |
| ७. | श्रीहरिकृत आचार्यपद स्थापन निरुपण | १० |
| ८. | सत्संग सुरभि | १२ |
| ९. | सत्संग बालवाटिका | १४ |
| १०. | भक्ति सुधा | १६ |
| ११. | सङ्गसंग समाचार | १९ |



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( महंत स्वामी )
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

# अस्मदीयम

सर्वोपरि इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने इस जीव पर इतनी कृपा की कि जो सबसे दुर्लभ मनुष्य की शरीर दिया, उससे भी अधिक महत्व की वात तो यह है कि सत्संग में जन्म देकर भाग्य का द्वार ही खोल दिया । अन्यथा कहाँ के कहाँ भटकते रहते । अपने संप्रदाय जैसी प्रणालिका अन्यत्र कहीं नहीं है।

इस कलिकाल में भगवान को प्राप्त करने के लिये हजारो वर्ष तक उग्र तप या कोई बड़ी उपासना नहीं करनी पड़ती । शिक्षापत्री के २१२ श्लोकों का नियम पूर्वक पालन किया जाय तो भगवान सभी प्रकार की मनोकामना पूर्ण करते हैं । कितने वर्षो से पूनम के दिन जेतलपुरधाम में महाप्रतापी रेवतीबलदेव हरिकृष्ण महाराज का दर्शन करने के लिये दूर दूर से भावुक भक्त पैदल चलकर आते हैं । कितने लोग तो ऐसे होते हैं जो जेतलपुर का नाम भी नहीं जानते । फिर भी किसी के मुख से प्रभु के प्रताप को सुनकर दर्शनार्थ आते हैं । उनकी सभी मनोकामना प्रभु पूरा करते हैं। जो एकबार भी पूनम की पदयात्रा किया उसका काम अवश्य होता है और वह प्रभु का आश्रित हो जाता है । इसके लिये समर्पित भाव होना जरुरी है । एकनिष्ठा भक्ति का भाव हो तो कार्यसिद्धि में देर नहीं लगती ।

कितने लोग तो दंडवत करते हुये आते हैं । ऐसे भक्त धन्य हैं । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव विजया दशमी के दिन साबरकांठा प्रदेश के इडर मंदिर में धूमधाम के साथ मनाया जायेगा । आगामी दीपावली, छप्पन भोग अन्नकूट दर्शन तथा विक्रम संवत् २०६७ का आरंभ हो रहा है । यहाँ से वीते वर्ष की तथा आगामी वर्ष की गणित करनी चाहिये कि विगत वर्ष हम कितनी भजन-भक्ति व्रत, नियम, तथा शिक्षापत्री के वचन का पालन किये हैं । इसविगत वर्ष में कुछ कमी रह गयी हो तो आगामी नूतन वर्ष में कोई कमी न रहे इस पर ध्यान रखकर भगवान की भजन भक्ति या शुभ कर्म करें ऐसी नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१०)



२७. अगस्त से ६ सितम्बर तक - अमेरिका के धर्मप्रवास में पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद श्री गणेशचतुर्थी प्रसंग पर पूजन - आरती अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया - श्री गणेशचतुर्थी प्रसंग पर पदार्पण।
श्रीजी सेनी ट्रेड प्रा.लि. में पदार्पण, रखियाल
श्री गौरव प्रवीणभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, नवा नरोड़ा

१२. सीमरीकंपा - पदार्पण.

१५-१६. सामत्रा ( कच्छ ) पदार्पण.

१९. जलझीलणी एकादशी - श्री गणेश भगवान के रथयात्रा में पदार्पण।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति - महापूजा प्रसंग पर पदार्पण इसके साथ ही वहाँ के हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण।

## साम्प्रयादिक उत्सव

**आश्विन शुक्ल-१२ :** ता. १९-१०-२०१० मंगलवार को गढडा श्री गोपीनाथजी महाराज का पाटोत्सव।

**आश्विन शुक्ल-१५ :** ता. २२-१०-२०१० शुक्रवार को शरद पूनम।

**आश्विन शुक्ल-१५ :** ता. २३-१०-२०१० शनिवार को मुकुटोत्सव पूनम।

**आश्विन कृष्ण-२ :** ता. २५-१०-२०१० सोमवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला पाटोत्सव।

**आश्विन कृष्ण-१२ :** ता. ३-११-२०१० बुधवार के दिन बाघ द्वितीया, धनतेरस, धनपूजा, रात्रि में ७-३० से ९-३०।

**आश्विन कृष्ण-१३ :** ता. ४-११-२०१० गुरुवार को चतुर्दशी श्री हनुमानजी का पूजन आरती सायंकाल ७-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से।

**आश्विन कृष्ण-१४ :** ता. ५-११-२०१० शुक्रवार को दीपावली अहमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रसादी की सभा में समूह शारदा पूजन सायंकाल ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न होगा।

**आश्विन कृष्ण-३० :** ता. ६-११-२०१० शनिवार अमावास्या को श्री गोवर्धन पूजन-बलिपूजन, ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन दोपहर में १२-०० बजे से ४-०० बजे तक।

**कार्तिक शुक्ल-१/२ :** ता. ७-११-२०१० शनिवार को नूतन वर्ष
मंगला आरती : ५-०० बजे।● श्रृंगार आरती : ६-३० बजे।● राजभोग आरती : प्रात: १०-१० बजे।
प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथो संपन्न होगी। बाद में अपनी आफिस में दर्शन का लाभ देंगे।

**कार्तिक शुक्ल-५ :** ता. १०-११-२०१० बुधवार के लाभ पांचम को श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया बालस्वरुप कष्ट भंजन देव का पाटोत्सव।

**कार्तिक शुक्ल-९ :** ता. १५-११-२०१० सोमवार श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा पाटोत्सव।

**कार्तिक शुक्ल-१२ :** ता. १८-११-२०१० गुरुवार श्री स्वामिनारायण मंदिर वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव का पाटोत्सव, श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद रंगमहोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव।

# प्रदक्षिणा विधि



- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

हमारे पौराणिक दर्शन शास्त्रो में ऐसा बताया गया है कि जब भक्त भगवान के मंदिर में दर्शन करने जांय तो भगवान के स्वरुप की प्रसन्नता तथा दिव्यगुणों का चिन्तन करने की भावना से जांय। उसी भाव से दर्शन एवं प्रणाम ( नमस्कार( करें । उसी विधिमें एक विधियह भी है प्रदक्षिणा जिसकी यहां चर्चा करने जा रहे हैं -

भगवान को प्रणाम करके प्रदक्षिणा करना बहुत जरुरी है । अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण जब वड़ताल रुकते तब भगवान की प्रदक्षिणा अवश्य करते थे।

भगवान की प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त से करनी चाहिये । भगवान का दर्शन - प्रणाम करके प्रदक्षिणा प्रारम्भ करनी चाहिये। भगवान के सन्मुख खड़ा होकर खूब ध्यान पूर्वक एक-एक अंग का निरीक्षण करते हुये तथा उन सभी अंग प्रत्यङ्ग एवं मुखारविंद को हृदय में उतारते हुये दर्शन करना उत्तम है। प्रदक्षिणा पूर्ण होने के बाद पुनः भगवान का उसी ढंग से दर्शन करके प्रस्थान करना चाहिये । प्रत्येक प्रदक्षिणा में भगवान का दर्शन आवश्यक है। उसी स्वरुप का प्रदक्षिणा के समय चिन्तन करना चाहिये।

यदि प्रदक्षिणा करने वाला भक्त भगवान का दर्शन-प्रणाम किये बिना प्रदक्षिणा प्रारंभ करता है तो वह जब तक पुनः दर्शन प्रणाम करके आगे न बढे तब तक वह प्रदक्षिणा एक ही मानी जायेगी। इसलिये प्रत्येक प्रदक्षिणा में भगवान का दर्शन-प्रणाम करना आवश्यक है।

भगवान की प्रदक्षिणा कब नहीं करनी चाहिये -

जब भगवान दिन में या रात्रि में शयन करते हो, प्रसाद ( भोग ) ग्रहण करते हों, पुजारी वस्त्र बदलते हों, आरती होती हो, भगवान के सामने परदा आ गया हो, उस समय प्रदक्षिणा करने से अपराधहोता है । जब भगवान का दर्शन चालू हो उसी समय प्रदक्षिणा की जा सकती है। कितने लोगों को डोक्टर प्रातः चलने के लिये कहा हो तो ऐसे लोग भगवान के शयन के समय या पूजारी जब प्रातः काल मंगला की सेवा में लगे हो, उसी समय आकर प्रदक्षिणा करें तो भगवान का अपराधहोता है । एक परिक्रमा करके प्रणाम करने के बाद ही दूसरी परिक्रमा करनी चाहिये । परिक्रमा का बहुत महत्व है । अर्थात् जिसकी परिक्रमा करते हैं वे वश में हो जाते हैं। भगवान की परिक्रमा करने वालों की सदा जय होती है । भुवनाधिपति भगवान को वश में करना हो तो श्रद्धा-भक्ति के साथ यथा विध्न परिक्रमा करनी चाहिये।

परिक्रमा कितनी करनी चाहिये -

एका चण्ड्याः रवेः सप्ततिस्रः कार्या गणेशस्य ।
हरेश्चतस्रः कर्तव्या शिवस्यार्ध प्रदक्षिणा ॥ आहिकसूत्र

आहीक-सूत्र में लिखा है कि देवी की एक प्रदक्षिणा, सूर्य की सात, गणेशजी की तीन, हरि ( भगवान ) की चार तथा शिव की आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिये।

अपने मंदिर में भगवान नारायण प्रधान स्वरुप में विराजमान हैं । इसलिये चार प्रदक्षिणा करनी चाहिये । चार प्रदक्षिणा पूर्ण विधिमें आती है । इससे अधिक की श्रद्धा हो तो चार चार के क्रम से २७ बार करने से १०८ बार प्रदक्षिणा हो जायेगी।

"प्रदक्षिणां ते प्रकरोति भक्त्या -
चतुर्भुजः यो हि चतुर्भुजस्य ।

स तीर्थदानव्रत यज्ञ विद्या -
चतुर्विधाप्नोति भयाद्धि मुक्तः ॥

अर्थात् भगवान चतुर्भुज स्वरुप में - शंख, चक्र, गदा, पद्म को धारण करते हैं। भगवान तथा भगवान के चारो आयुधभक्त के वेश में हो जाते हैं। तीर्थ, दान, व्रत, यज्ञ, विद्या का फल भी चार प्रदक्षिणा करने मात्र से प्राप्त हो जाता है। परिक्रमा भगवान को वश में करने का अमूल्य साधन है।

अग्नि पुराण में लिखा है कि -

"चतस्त्रः केशवे कुर्यात् सप्तस्यः प्रदक्षिणाः"

अर्थात् केशव की चार तथा पीपल की सात प्रदक्षिणा करनी चाहिये। देवी, गणेशजी, सूर्य, पीपल, गाय, माता-पिता, शिवजी की प्रदक्षिणा का विधान शास्त्रों में खूब वर्णित है। इसका विस्तार किये बिना, अपने मंदिर में भगवान नारायण की प्रदक्षिणा के विषय में चिन्तन करते हैं।

श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में अनेकों जगह पर पूजा-विधिउपवास, कर्मकांड करने के लिये यथाविधि, यथाशास्त्र उल्लेख किया है। इसलिये प्रदक्षिणा भी यथा विधिकी जाय तो ही उसका उत्तम फल मिल सकता है। भगवान गणेश भी माता-पिता की प्रदक्षिणा किये तो मातपिता प्रसन्न हुये और ऋद्धि-सिद्धि अर्पण किये। इसके साथ ही भगवान कार्तिकेय सम्पूर्ण पृथ्वी की प्रदक्षिणा मयूर पर बैठकर किये तो भी गणेशजी के तुल्य नहीं हो पाये।

भगवानश्री राम के पूर्वज दिलीप गोशाप के कारण सन्तान विहीन हो गये थे, पुनः गाय की सेवा तथा प्रदक्षिणा करने से शाप मुक्त हो कर सन्तान प्राप्ति किये थे।

"यानि कानि च पापानि जन्मान्तर्कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे-पदे ॥

अर्थात् जन्म-जन्मान्तर में ज्ञात-अज्ञात कोई पाप हुआ हो तो प्रदक्षिणा करते समय प्रत्येक कदम पर पाप का नाश हो।

पदे-पदे या परिपूजकेभ्यः
सद्योऽश्वमेधादि फलं ददाति।
तां सर्व पापक्षय हेतु भूतां -
प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

परिक्रमा करने से एक-एक पद में पूजा कही गयी है। इस तरह करने वाले की सभी मनोकामना पूर्ण होती है तथा सभी प्रकार के पाप का नाश होता है।

श्रीजी महाराज शिक्षापत्री के ७७ वें श्लोक में चातुर्मास के विशेष नियम में आठ नियम को उत्तम कहा है - कथा, श्रवण, वाचन, कीर्तन, महापूजा मंत्रजाप, स्तोत्रपाठ तथा प्रदक्षिणा।

अपने सम्प्रदाय में घनश्याम महाराज की जन्म भूमि छपैया के प्रसादीभूत स्थलो की प्रदक्षिणा करने की परम्परा है। इसी तरह वैष्णव परम्परा में ब्रह्मभूमि तथा गिरिराज तक चलकर या साष्टांग प्रणाम करते हुये प्रदक्षिणा की परम्परा है। अयोध्या में भी परिक्रमा के समय लाखों भक्तों की भीड़ होती है। जिसकी खूब महिमा है।

परिक्रमा चलकर या दंडवत् प्रणाम करते हुये की जा सकती है। यह श्रद्धा का विषय है। शरीर के स्वास्थ के ऊपर निर्भर करता है। लेकिन यह सत्य है कि परिक्रमा के विना दर्शन पूर्ण नही कहा जा सकता।

वर्तमान के वैज्ञानिक युग के विद्वान कहते हैं कि परिक्रमा करते समय भगवान की मूर्ति में स्थित ऊर्जा शक्ति का अपने शीर में संचार होता है।

शास्त्र में परिक्रमा करते समय का विधान लिखा है - "प्रतिपदसि प्रतिपदे, त्वनुपदस्वनुपदे त्वां संपदसि, सम्पदे त्वां तेजोऽसि तेजसे त्वां। ये तीर्थांति प्रचरन्ति सृकाहस्ता तिषङ्गिणः तेषां सहस्त्र योजने वाधन्वानितन्मसि।

"अर्थात् भगवान का नाम स्मरण करते हुये या जनमंगल का पाठ करते हुये परिक्रमा करनी चाहिये। परिक्रमा करते समय बीच में बोल देने से वह परिक्रमा अधूरी रह जाती है। अतः मौन होकर, बात न करते हुये प्रदक्षिणा करने का विधान है।


**નીચેના મહામંદિરોમાં નિત્ય દર્શન માટે**

જેતલપુર : www.jetalpurdarshan.com
મહેસાણા : www.mahesanadarshan.org
છપૈયા : www.chhapaiya.com
ટોરડા : www.gopallalji.com

# भरतखंड में श्री नरनारायणदेव की उपासना



- शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( अहमदावाद )

भक्तों ! उपासना, ध्यान, भक्ति हंमेशा भगवान की या उनके अवतारों की कीजाती है। जगत में देव-देवियों के स्वरुप की पूजा होती है। देव-देवियों की उपासना से भौतिक सुख मिल सकता है लेकिन भागवत एवं गीता जैसे अनेकों शास्त्र यही कहते हैं कि देवी-देवताओं से भले सांसारिक सुख प्राप्त होजाय परंतु मोक्ष तो भगवान ही देते हैं। इसीलिये शास्त्र भगवान की उपासना करने को कहते है। मुचकुंद राजा देवों के पक्ष में रहकर असुरों से युद्धि किये। बाद में देवताओं ने वरदान मांगने को कहा, तब मुचकुंद राजा ने मोक्ष मांगा। लेकिन देवताओं ने कहा मोक्ष तो भगवान ही दे सकते हैं। इसके अलांवा दूसरा कुछ मांगलो। तब राजा ने कहा कि मैं युद्ध करते हुये थक गया हूँ, मुझे निद्रा दे दीजिये और मैं सोजाऊँ। यदि कोई मुझे जगावे तो वह जलकर भस्म हो जाय।

भक्तो भागवत स्वयं कहते हैं कि देवता लोग राजामुचकुंद को मोक्ष नहीं दे सके। मोक्ष का वरदान तो कालयवन की मृत्यु के बाद भगवान श्रीकृष्ण ने ही दिया।

यह बात तो स्पष्ट होगयी की भगवान की उपासना से ही मोक्ष होता है, लेकिन किस भगवान की उपासना करनी चाहिये ? तो शास्त्रों से ही प्रमाणित हो पायेगा कि इस भरत खंड का राजा कौन ? आराध्य देव कौन ?

श्रीमद् भागवत, वायुपुराण, महाभारत, विष्णु पुराण, इत्यादि में भरत खंड में श्री नरनारायणदेव को ही भरतखंड का राजा कहा है। वे ही मनुष्यों के लिये भरतखंड देश में आराध्य देव कहे गये है। जिस तरह जिसके देश में रहते हैं, उस के नियम को मानना पड़ता है। उसके ध्वज का सम्मान करना पड़ता है।

जो अमेरिका में रहता हो या ओस्ट्रेलिया, लंडन में रहता हो जहाँ भी जो रहता है वहाँ के नियम को मानना पड़ता है, उसी में हित भी है। इसी तरह हम भी भरतखंड श्री नरनारायणदेव के देश में रहते हैं। इसलिये वे ही हमारे आराध्य देव है। वे ही उपास्य हैं। इन्हें छोड़कर जो अन्य की उपासना करता है वह मार्ग भूला कहा जायेगा। अन्यत्र श्रद्धा रखने वालों का कभी कल्याण होता ही नहीं है। यह भारत भूमि योगियों, तपस्वीयों की है। लेकिन भोगियों की तो है ही नहीं। इसीलिये श्री नरनारायण की तपस्वी मुद्रा सभी भरतखंडवासियों के लिये आध्यात्मिक आदर्श है जीवन का रहस्य तप में हैं भोग में नहीं। इस सृष्टि के आदि से लेकर श्री नरनारायण भगवान की उपासना आरम्भ हुई थी। श्रीमद् भागवत में लिखा है कि नारदजी भारतवर्ष की प्रजा के साथ भगवान नरनारायण का भक्ति भाव से भजन करते हैं और अधोनिर्दिष्ट मंत्र का जप करते हैं -

"ॐनमो भगवते उपराम शीलायो परतानात्म्याय
नमोऽकिंचन वित्ताय ऋषि ऋषभाय नरनारायणाय
परमहंस परम मुखे आत्मारामाधिपतयेनमो नमः"

भक्तह्वों ! नारदजी अकेले भजन नहीं करते हैं बल्कि उनके साथ भरतखंड की प्रजा भी भजन करती है। भारत वर्ष कौन ? तो आज का छोटा सा देश नहीं, बल्कि अगल बगल के सभी देश इसी में थे। उस समय से भारत वर्ष की सभी प्रजा श्री नरनारायणदेव की उपासना करती है। नारदजी, उद्धवजी जैसे हजारो मुक्त आज भी नारायण मंत्र का विधिपूर्वक जप करते रहते हैं। उपरोक्त प्रमाण से प्रमाणित होता है कि हजारों वर्ष से श्री नरनारायणदेव की उपासना होती रही है। और आज भी हो रही है। भीष्म पितामह कहते हैं कि आज तक हजारो कल्प बीत गये, कितने सर्ग तथा प्रलय भी हो गये। प्रत्येक सर्ग में ब्रह्माजी ही सृष्टि के निर्माता होते हैं। ब्रह्माजी अपनी उत्पत्ति के कारण भगवान श्री नरनारायण को अच्छी तरह जानते हैं। ब्रह्माजी भगवान के ही गुण गान करते रहते हैं। भीष्मपितामह के मुख से ऐसी महिमा सुनकर पांचो पाण्डव श्री नरनारायण के परम भक्त हो गये। उसी समय से उन्ही की भक्ति करने लगे। इतना ही नहीं बल्कि श्री नारायण भगवान के अवतार स्वयं व्यासजी भी भगवान नारायणके नाम मंत्र को जपते रहे और महिमा का गुणगान किये। इस तरह की अद्वितीय महिमा होने से ही भगवान स्वामिनारायण ने अहमदाबाद में अद्वितीय शिखरी मंदिर बनवाकर भक्ति उपासना के लिये श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया। यह एक रहस्यात्मक बात है। ( क्रमशः )

# विधवा कुं स्पर्शत नहीं करत, न आत्मघात

- शास्त्री स्वामी अभयप्रकाशदासजी गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी ( नारायणघाट )

भगवान स्वामिनारायण ने विधवा के स्पर्श का निषेधशिक्षापत्री में किया हैं । विधवा का स्पर्श धर्म रक्षा में बाधक है । विधवा स्त्री अपने धर्म की रक्षा कर सके इसके लिये निषेधकिया गया है । विधवा स्त्री के निकट सम्बन्धहोने पर स्पर्श का निषेधनहीं । लेकिन हंसी-मजाक का निषेधकिया गया है । इससे धर्म तथा ब्रह्मचर्य का पालन होता है । भगवान को ही पति के रुप में भजन पूजन तथा सेवा करने का विधान है ।

''करत न आत्मद्यात''

शास्त्रो में दो प्रकार से हिंसा का उल्लेख मिलता है । प्रथम दूसरे की हिंसा ''हिंसा न करनी जंतु की'' इस में चर्चा की जा चुकी है । अब स्व हिंसा का निरुपण करते हैं''करत न आत्मघात'' स्व हिंसा अर्थात् आत्मघात या आत्महत्या के नाम से जानते हैं ।

आत्मघात जीवन में कई कारणों से लोग करते हैं । जैसे क्रोधमें आकर, लम्बे समय से रोग के कारण, अयोग्य आचरण के कारण, घर में नित्य झगड़ा के कारण, कहीं-कहीं तो धर्म के नाम पर आत्महत्या होती है ।

( १ ) क्रोधमें : शास्त्र में ऐसा कहा गया है कि जब किसी को क्रोधआता है तब वह अंधा हो जाता है । अंधा का मतलब आंख से अन्धा नहीं बल्कि क्रोधके कारण विवेक खत्म हो जाता है जिससे ऐसा वह विचार करने लगता है ।

( २ ) दीर्घ रोग के कारण : जीवन में कोई ऐसा असाध्य रोग हो गया हो जो ठीक न होता हो, जिसकी पीड़ा सहन न होती हो तो मनुष्य आत्महत्या की तरफ बढता है ।

( ३ ) अयोग्य आचरण से : जीवन में कोई ऐसी अयोग्य घटना हो जाती है, जिससे समाज में मुंह दिखाने लायक नहीं रहता और वह आत्महत्या की तरफ बढता है ।

( ४ ) घर के झगड़े : घर में, परिवार में एक दूसरे का स्वभाव न मिलने से, अपने स्वभाव में परिवर्तन न होने के कारण, जिद्दी स्वभाव के कारण क्लेश, झगड़ा की शुरुआत होती है । इस तरह नित्य झगड़ा होने से मनुष्य परेशान होकर आत्महत्या का विचार करने लगता है ।

( ५ ) धर्म के नाम पर : कितने लोग कहते है कि काशी में जाकर करवत शरीर पर चलाने से या गिरनार पर्वत पर जाकर नीचे कूदने से कल्याण होता है । लेकिन ये सभी बातें कालिकाल में एकदम झूठी हैं। इसतरह आत्मघात करने से मुक्ति मिलती हो तो जितने भी पापी हैं, सभी रोज पाप करेंगे और बाद में काशी में जाकर शरीर पर करवत चलवालेंगे या तो गिरनार पर्वत पर जाकर कूद जायेंगे । लेकिन ऐसा होता नहीं है। किये हुये कर्म का फल तो भोगना ही पड़ता है । कोई लम्बासमय से रोग है तो उसे कर्मकाल भोग समझकर भोगना चाहिये, आत्महत्या करने से कर्म मिथ्या तो हो नहीं सकता है । दूसरा जन्म लेकर भोगना ही पड़ता है ।

इसलिये भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री के १४ वें श्लोक में आज्ञा की है -

आत्मघातस्तु तीर्थेऽपि न कर्तव्यश्च न क्रुधा ।
अयोग्याचरणात् क्वापि न विषोद्बन्धनादिना ॥

( अनुसंधान नं. १३ पर )

# नियमों की दृढता

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी - जमीयतपुरा ( महंत माणसा )

"जेने भणवुं होय ते भणज्यो,
सहु नियम मां कुशल रहेज्यो ।
जे जे थाय नियम मांथी बार,
ए तो नथी गमतुं अमारुं ॥"

भगवान स्वामिनारायणने अपने आश्रितों के लिये विशेष सूचना दी है कि सभी लोग नियम में दृढता रखना । आधुनिक शिक्षण में नियम-धर्म का लोप न होजाय इसका ध्यान रखना आवश्यक ।

फूल स्पीड में दौड़ने वाले वाहन में यदि ब्रेक नहीं हो तो अकस्मात होने की पूरी सम्भावना है । गाड़ी की यात्रा तभी सफल होती है जब उस में ब्रेक हो । मानवजीवन की स्थिति ठीक ऐसी ही है । जो जितना नियम का पालन करे वह उतना ही सज्जन कहा जायेगा । जो नियम में न रहे उसे दुर्जन कहेंगे । ऐसे व्यक्ति के ऊपर से विश्वास सभी का उठ जाता है ।

नदी में दो किनारे न हों तो, उसे नदी नहीं कहेंगे . उसका पानी चारो तरफ बहने लगेगा जिससे वह नदी सुख की जगह दु:ख देने वाली हो जायेगी ।

नदी का दोनो किनारा ही उसके नाम को सार्थक करता है । भक्तों के जीवन में व्रत तथा नियम ये दो किनारे है । ये दोनो किनारे टूटें तो वह भक्तपना से रहित होजायेगा । लज्जा में भी धर्म पालता है -

जो लाज जेना मनथी न तूटे ।
तो धर्म ते तो नहीं छेक छूटे ॥
( हरिलीलामृत क. ७ )

व्रत-नियम जितना पक्का होगा उतनी ही भक्ति उसके हृदय में दृढ होगी और वह व्यक्ति भगवान के चरणारविंद तक पहुंचने में सफल हो जायेगा ।

किनारे विना का समुद्र अपनी मर्यादा का उल्लंघन करे तो सुनामी की स्थिति पैदा होगी और लाखों की जान जायेगी, लाखों लोग बेघर हो जायेंगे, अनेकों पशु-पक्षी, वृक्ष, लता इत्यादि सभी का सत्यानाश हो जायेगा । लेकिन महासागर धीर गम्भीर है । अपनी मर्यादा का कभी अल्लंघन नहीं करता । इसी तरह संत तथा बड़े महापुरुष भी धीर गंभीर होते हैं । इसीलिये तो मुक्तानंद स्वामीने प्रभातिया में गाया है -

"धीरा धुरन्धर शूरा साचा खरा ।"

अनंत जीवों का कल्याण करने वाले प्रभु मोक्ष के दाता है । वे अपने कर्तव्य के प्रति सदा सावधान रहते हैं । भगवान अपनी मर्यादा का कभी लोप नहीं करते, इसी तरह भक्त भी भगवान की आज्ञा में रहे तथा मर्यादा का लोप न करें तो भगवान उनका अवश्य कल्याण करते हैं । अपने वात्सल्य मूर्ति बड़े महाराजश्री इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । वे अपने जीवन में श्रीहरि की आज्ञा का लेशमात्र भी लोप नहीं किये । इतना ही नहीं बल्कि अवगणना भी नहीं किये हैं ।

काफी लम्बे समय तक भात न खाने का नियम था । सादा भोजन करते हम सभी देखें हैं । नियम अर्थात् नियम । अपनी तरह नहीं दाल की सुन्दर वघार हो, अन्य भोज्य पदार्थ हों तो मजा आजाती है । अपना जीवन तो सुराखाचर की तरह से हैं । वे खाने-पीने में नियम नहीं रखते थे । परंतु पूज्य बड़े महाराजश्री का जीवन आज भी प्रात: काल से लेकर शयन काल तक दिन चर्या देखने लायक है ।

व्रत - नियम तो आध्यात्मिकता की कसौटी है । इसीलिये महाराज ने शिक्षापत्री में सभी आबाल वृद्ध नरनारी के लिये नियम लिखकर कहा कि यह शिक्षापत्री मेरी स्वरुप है । यह भी कहते है कि नियम तथा साधु को तो मैं अक्षरधाम में से साथ लाया हूँ ।

"सधर्मवाला शुभ होय संत,
एनाथी सत्संग वधे अनंत ।

भले भण्या के न भणेल होय,
तेना थकी थाय समास तोय ॥''
( हरि लीलामृत-क-७ )

नियम-धर्म की दृढतावाले संत-भक्तों से सत्संग हुआ है। नियम धर्म का पालन करने से सभी सदा सुखी रहेंगे।

''जो कोई सत्संगी नाम कावे,
पंचव्रत ने पाले पलावे।
ते आ लोक परलोक ने मांई
रहे सुखी ते जन सदाय ॥''

प्रत्येक खेल में कोई न कोई एक नियम तो होता ही है। क्रिकेट में जहाँ कहीं से बोल नहीं फेका जासकता। रेखा के बाहर खड़ा रहने का नियम होता है। इसके साथ ही सतत निरीक्षण करता हुआ अंपायर कड़ी नजर रखता है। ट्राफिक का भी कड़क नियम होता है।

अपने वाहन को बांई तरफ चलाना चाहिये। लाल बत्ती तथा हरीबत्ती का अनुसरण करना ही पड़ता है। चाहे अनपढ ड्राईवर हो या कलेक्टर हो, खुद न्यायालय का अधिपति न्यायाधीश क्यों न हो नियम में किसी को छूट नहीं मिलती। सामान्य व्यक्ति हो या जन समूह हो, मुमुक्षु सत्संग समाज हो या संत समुदाय या धर्मकुल हो सभी के लिये नियम बताया गया है। इतना ही नही श्रीहरि भी स्वयं नियम में रहकर कार्य करते थे। यही अपनी यथार्थ कीमत है। यही अपनी परंपरा है। यही अपनी जवाबदारी है ( उत्तरदायित्व है )। यह नियम का पालन न हो तो रास्ते में चलने वाले कुत्ते या पशु के समान जीवन समझना चाहिये। इसलिये सभीलोग अपने-अपने नियम में दृढता रखे इसी में सुख है।

''पंच वरतने पालज्यो, प्रभु भज्ज्यो रुडी पेरा''
( भक्ति चिंतामणी-प्र-३८ )

**श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के विषय में**

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग के संचालको को ज्ञात करवाना है कि प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से इस वर्ष परीक्षा मात्र २ भागों में ली जायेगी। ( १ ) बाल सत्संग ( २ ) किशोर सत्संग जिसकी पुस्तिका प्रकाशित हो गयी है। हमारे कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग कार्यालय में से मिलेगी। आगामी परीक्षा ता. २६-१२-२०१० के रविवार को ली जायेगी। अन्य माहिती के लिए धार्मिक शिक्षण विभाग कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद संचालकश्री रणछोड़भाई देवाणी का संपर्क किया जाय।

## संप्रदाय का गौरव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री संस्थापित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर जो श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी द्वारा संलग्न है। ९-९-१० को श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी द्वारा पदवीदान का आयोजन किया गया था। जिस में माननीय राज्यपाल श्री कमलाबहन बेनीवालकी तरफ से युनिवर्सीटी के कुलपति श्री पंकजभाई जानी के वरद् हाथों डीग्री तथा चंद्रक दिया गया था। जिसमें अपने विद्यालय के साधु चैतन्यस्वरुपदास गुरु पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ( महंत नारायणघाट ) संम्पूर्ण युनिवर्सीटीके शास्त्री खंड में रामानुज वेदांत विषय में तृतीय क्रम आने से डीग्री एवं कांस्यपदक तथा पुराण विषय में आचार्य खंड में साधु हरिओमप्रकाशदाजी ( गढपुर ) तृतीय क्रम में, साधु कुंजविहारीदास ( जूनागढ ) आचार्य खंड रामानुजवेदान्त विषय में तृतीय क्रम में, विवेकसागरदास द्वितीयक्रम तथा तुषार लेहरु प्रथम क्रम आचार्य खंड रामानुजवेदान्त विषय में उत्तीर्ण होने से उपरोक्त विद्यार्थीयों को चन्द्रक तथा डिग्री द्वारा सन्मानित किया गया था। ऐसा सुखद एवं गौरवपूर्ण समाचार सुनकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री अपने श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

# श्रीहरिकृत आचार्यपद स्थापन निरुपण

- गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापुनगर )

सम्पूर्ण जगत जानता है कि भगवान स्वामिनारायण ने अपने ही स्थान पर अपने पिता के कुल में से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करके धर्मधुरा को समर्पित किये हैं । सांप्रदायिक शास्त्रों में तो इसका वर्णन है ही, लेकिन वर्तमान में सम्प्रदाय से बाहर के लोग भी इस परंपरा के आचार्य महाराजश्री का दर्शन करते हैं तो दर्शन करने वाले को उस स्वरुप में श्रीहरि की अनुभूति होती है। परंतु अन्य क्षेत्र में जिस तरह कुछ आसुरी तत्ववाले होते हैं उसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आसुरी तत्व के होते हैं जो असंतोष की आग में जलते रहते हैं। ऐसे लोग इस आचार्य पद को मानने के लिये तैयार नहीं है। वे सभी भगवान स्वामिनारायण से अधिक बुद्धिशाली स्वंय को मानते हुये ५१ सदस्यों की सत्संग सिक्योरिटी काउन्सिल नाम की एक पुस्तक २००० के वर्ष में लिखे । परंतु जिस में कमी होती है वे सदैव डरते रहते हैं। इसलिये वे सभी अपने नाम को प्रकाशित नहीं किये । उन मूर्खो ने उस काउन्सिल के बहाने यह लिखा कि दोनो गादी ( वडताल-कालूपुर ) को समाप्त करके एक किया जाय और उस स्थान पर शिक्षापत्री ग्रन्थ एवं श्रीहरि की पादुका को स्थापित किया जाना चाहिये।

इस प्रकार के लेख को बांचने से ऐसा लगता है कि वे मूर्ख अखंड ब्रह्मांड के अधिपति भगवान स्वामिनारायण को सलाह देने जा रहे हैं। उन्हें यह पता नही कि जो प्रभु की स्वरुप भूता शिक्षापत्री है उससे क्या दीक्षाविधिया मूर्ति प्रतिष्ठा सम्भव है ? इसी तरह पादुका की प्रतिष्ठा करने से क्या उपरोक्त कार्य सम्भव है ? दीक्षा की महत्ता क्या है, इस पर लेख लिखने जायेंगे तो लेखडायवर्ट हो जायेगा । इसलिये जिसे इसमें ज्ञान है वे स्वयं समझलें ! लेकिन श्रीहरि अपने वचन के अनुसार आचार्य महाराज में सदा विद्यमान हैं इसलिये वे ही धर्मधुरा संभाल सकते हैं। एक प्रयोग के रुप में जितना आचार्य महाराजश्री सत्संग के लिये विचरण करते हैं, मूल सिद्धान्तों के लिये विचरण करते हैं उतना एक महीना मात्र दौड़कर देखिये, आपको खबर पड़ जायेगी । आप सत्संग की चिंता छोड़कर भगवान की भजन कीजिये, इसी में आपकी भला है आपका हित है। इस मोक्षदायी दिव्य संप्रदाय में स्वयं श्रीहरिने आचार्य पद की स्थापना की है। इसलिये कितना भी बलवान आसुरी शक्ति वाला इस पद को उखाड़ने का प्रयत्न करेगा, सफल नहीं होगा । यह पद श्रीहरि के समय से प्रतिष्ठित है और अनंत काल तक प्रतिष्ठित रहेगा । शास्त्र का कितना भी तोड़मड़ोर कर अर्थघटन करके विरोधकरते रहिये लेकिन आपके मन में कभी यथार्थ की प्रतीति नहीं होगी । "संशयात्मा विनश्यति" । आप जिस तरह का लेख लिखें है कि यह अंधश्रध्धालुओं का विषय है या मूर्ख लोगों का विषय है, लेकिन हमारे जैसे अनेको श्रीहरि के आश्रित श्रीहरि के चरित्र में तथा उन्हीं के वचनमें विश्वास रखते हैं । इसके अलांवा जो आपलिखे हो कि स्वामिनारायण के लेखक खरीदे हुये लेखक हैं, तो यह भूल जाइये, इसलिये कि जिसे पीलिया रोग हो उसे सबकुछ पीला ही दिखाई देता है संप्रदाय का सबसे महत्व पूर्ण ग्रन्थ सत्संगिजीवन जो २००१ की साल में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मंदिर द्वारा प्रकाशित हुआ है । उसी के चौथे प्रकरण के २० वें अध्याय में सुव्रत मुनि कहते हैं कि हे महाप्रताप सिंह राजन ! श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्रांगण में स्वर्गीय सभा के समान सभा हुई । उस सभा में सभी भक्त नर-नारी यथायोग्य स्थान पर बैठे हुये थे । श्रीहरि सिंहासन पर विराजमान थे । पुत्रों के साथ रामप्रतापभाई तथा इच्छारामभाई अपने पुत्रों के साथ श्रीहरि के आगे

आकर बैठे । संतवर्णी, गृहस्थ स्त्री-पुरुषों का नाम ग्रन्थ में से ज्ञात कर लेना।

जब सभा में सभी लोग बैठ गये तब अपनी धर्मधुरा धर्मवंशी में देने की इच्छा से श्री नारायणमुनि ने रामप्रताप तथा इच्छाराम से कहा । हे भाई ! आप दोनो हमारी वात सुनिये । मैं अपने मन का संकल्प सुनाता हूँ । इस लोक में गुरुपरंपरा में जो मेरा अधिकार है तथा श्री रामानंद स्वामीने जो अधिकार दिया है, उस अधिकार स्वरुप धर्मधुरा को आज में अपने पिता धर्म के वंश में समर्पित करना चाहता हूँ। इस प्रकार की इच्छा को पूर्ण करने के लिये आपदोनो से एक-एक पुत्र मांगता हूँ । सुव्रत मुनिने कहा, हे राजन्! इस तरह सहजानंद महाप्रभु की वाणी सुनकर श्रीहरि के बड़े भाई रामप्रतापजी कहने लगे । हे हरे ! हमें तीन पुत्र हैं इन में आपको जो योग्य लगे वह आप ले लीजिये । बाद में छोटे भाई इच्छारामजी बोले, हे हरे! हमारे पांच पुत्र हैं उनमे से जिसे आप चाहते हैं ले लीजिये । दोनो भाईयो के इस वचन को सुनकर श्रीहरि बोले, हे भाई ! आप अयोध्याप्रसादजी नाम वाले पुत्र को दीजिये । हे इच्छारामभाई! आप रघुवीर नामवाले पुत्र को दीजिये । बाद में श्रीहरिने वैदिक पंडितो द्वारा दत्तक विधिकरवा कर दत्तक पुत्र के रुप में स्वीकार किया । इसकेबाद अपने आसन पर बैठाकर, अनर्घ्य आभूषणों से अलंकृत करके, अपने भक्तों द्वारा पूजन करवाया।

बाद में भगवानने, पुत्रों से कहा, हे पुत्र आप सभी मेरा वचन सुनो ! अपने इष्टदेव भगवान श्रीहरि हैं । हे पुत्र ? हमने इस पृथ्वी पर अनेकों कृष्ण मंदिर बनावाये है, इसके साथ ही मंदिर की आजीविका के लिये दशांश-विशांश दान की व्यवस्था भी की है। इन सभी में दो मंदिर मुख्य है । प्रथम मंदिर श्रीनगर ( अहमदाबाद ) में श्री नरनारायणदेव का मंदिर है । दूसरा वडताल में श्री लक्ष्मीनारायणदेव का मंदिर है। दोनो मंदिर का आधार लेकर भारत वर्ष को उत्तर विभाग तथा दक्षिण विभाग के रुप में विभक्त किया हूं। उत्तर विभाग श्री नरनारायणदेश तथा दक्षिण विभाग श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश विभाग के नाम से जाना जायेगा । दक्षिण विभाग में जो भी धन धान्य-वस्त्राभूषण दशांश-विशांश के रुप में दिया जायेगा वह मुख्य मंदिर में भेंट के रुप में दिया जायेगा । उत्तर विभाग में भी इसी तरह का व्यवहार होगा । ऐसी व्यवस्था हमने की है दोनो देश के आश्रितजन धर्मगुरु पद की रक्षा के लिये दशांश-विशांश देंगे उसमें से रक्षा होती रहेगी । इस के बाद श्रीहरि ने शुकानंदमुनि से देश विभाग की पत्रिका लिखाई । हे राजन् ! इस पत्रिका को इस प्रकार लिखवाकर दोनो दत्तक पुत्रों को अपने हाथों से देते हुये कहा कि श्री लक्ष्मीनारायणदेश की पत्रिका रघुवीरजी आप ग्रहण करो तथा श्री नरनारायणदेव देश की पत्रिका आयोध्याप्रसादजी आप ग्रहण करो । इस तरह दोनो को देश विभाग की लेख पत्रिका देकर, आश्रितजनों से कहा कि आज से हमारे पद पर अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी आचार्य के रुप में प्रतिष्ठित हुये हैं । इसके बाद इनके स्थान पर जो भी आयेंगे उन्हें ही धर्मगुरु के रुप में स्वीकार करना अन्य को नहीं । इन्ही से मूर्तिप्रतिष्ठा तथा दीक्षाविधान चाहें वे त्यागी हो या गृही हों सभी के गुरुपद पर रहेंगे । दोनो देश के विभागानुसार ( उत्तर-दश्रिण देश ) दोनो देश के आचार्य पत्नी स्त्रियों के लिये गुरु पद पर रहेंगी । महिला त्यागी वर्ग या स्त्रीवर्ग को दीक्षा देने का अधिकार मात्र आचार्य पत्नी को होगा।

धर्मवंश में उत्पन्न अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी महाराज को पीठाधिपति मानना तथा अन्न, वस्त्र, आभूषण इत्यादि से उनकी सेवा करना । इस गुरु पद का आश्रय करने वालों का सर्वदा कल्याण होगा । भगवान श्रीकृष्ण उन्हें अपने धाम में लेजायेंगे।

# सत्संग सुरभि

## मने कहोने परमेश्वर केवा हशे ?

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला ( मेमनगर-अहमदाबाद )

पुराने बाल गीतो में एक सुंदर बाल गीत था । "मने कहो ने परमेश्वर केवो हशे ?" इस शीर्षक में कविने बालकों के मन में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों का उद्भावन किया है । माता बालक को प्रतिदिन परमेश्वर की वात करके रात्रि में सुलाती है । बालक का मन परमेश्वर की वातों में लग जाता है । बाद में बालक के मन में स्वप्न आने लगता है कि वह परमेश्वर कैसा होगा ? कहाँ रहता होगा ?

गगन नी ओढणी मां चांदा-सूरज ने,
ताराने गूंथनार केवा हशे ?
आंबानी ऊँची डाले चढी ने,
केरी ने मूकनार केवा हशे ?
ऊँडा ए सागर नां मोजां उछाडी,
घू घू गजावनार केवा हशे ?

अन्त में -

मनेय मारी माडीना खोड़े सुवाड़ी,
हेते हुलावनार केवां हशे ?

पांच वर्ष का ध्रुव दूसरी माता सुरुचि के कटाक्ष से तथा स्व माता सुनीती के कहने से अकेले तपस्या करके परमेश्वर को पानेके लिए जंगल की तरफ चल पड़ते हैं । उसी समय मार्ग में नारदजी जैसे सद्गुरु मिलते हैं । परमेश्वर को पाने की उत्कट इच्छा हो तो सद्गुरु सामने से मिलजाते हैं । अंतमें प्रभु स्वयं ध्रुव की तपस्या से प्रसन्न होकर चतुर्भुज स्वरुप में दर्शन देकर अपने स्वरुप का यथार्थ ज्ञान देते हैं ।

इतना ही छोटा प्रहलाद असुर पिता के आसुरी त्रास से त्रस्त होते हुये भी परमेश्वर में दृढ विश्वास होने से डर नाम की कोई चीज उसमें नहीं थी । अन्त में उसे जलते हुये खम्भे में भी ईश्वर दिखाई देते हैं, इस तरह का विश्वास होने से, उस खंभे के साथ भेंटने पर भी उसका कुछ नही होता है । भगवान नरसिंह के रुप में तत्काल प्रगट होकर बालक की रक्षा करते हैं । असुर पिता का नाश करते है । भगवान प्रहलाद को गोद में रखकर माता की तरह प्रेम करने लगते हैं । जब वरदान मांगने को कहते है तब प्रहलाद ने कहा प्रभु ? आपने असुरपति पिता से मेरी रक्षा तो की, लेकिन हमारे भीतरी अन्तःशत्रुओ ( काम, क्रोध, लोभ इत्यादि ) से यदि मेरी रक्षा करें तो ही मेरी रक्षा कही जायेगी । इसी तरह नचिकेता अपनी दृढ निष्ठा के कारण ही यमद्वार से वापस लाया था ।

इन सभी बाल दृष्टांन्तो में परमेश्वर को प्राप्त करने की महेच्छा व्यक्त की गयी है । यह भावना जब मन में आजाय कि ईश्वर कैसे हैं ? क्या करते हैं ? कहाँ रहते हैं ? तब निश्चित ही परमेश्वर सम्बन्धियथार्थ स्वरुप को जान लेता है ।

इस जीव रुपी बालक को यह प्रश्न सदा सताता रहता है । जगत स्त्रष्टा ब्रह्मा भी पचास-पचास वर्षों से ( ब्रह्मा के वर्ष अनुसार ) प्रार्थना करके थक चुके हैं । हे परमेश्वर ? हे प्रभो ? आप ही बताइये कि परमेश्वर कैसे हैं ? आप इस का उत्तर स्वयं करेंगे तो सभी जीवों का कल्याण हो जायेगा तथा प्रश्न का उत्तर भी मिल जायेगा ।

परमेश्वर अपने दिव्य धाम ऐसे अक्षरधाम में बैठकर विचार करने लगे कि हम रामकृष्णादि तक बहुत सारे अवतार धारण किये लेकिन उन स्वरुपों से कुछ ही जोवीं को हमारे स्वरुप की पहचान हो सकी । परंतु अब अनेकों जीवों को हमारे स्वरुप की पहचान हो सके तथा हमारे स्वरुपका यथार्थ ज्ञान हो सके इसके लिये माया का आवरण पृथ्वी पर हमारे बिना गये हटना संभव नहीं है, इसके लिये पृथ्वी पर प्रभु का अवतार हुआ । जीव भटकता ही रहेगा । इस भवाटवी में भटकने वाले इन सभी जीवों का कल्याण करने के लिये स्वयं प्रभु इस

धरती पर पधारे।

इसीलिये अक्षरधाम के अधिपति परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण सुपात्र तथा कुपात्र सभी प्रकार के जीवों का मोक्ष करने के लिए तथा इहलौकिक सुख देने के लिये पृथ्वी को कृत कृत्य किये।

वही श्री घनश्याम महाराज श्रीहरि, श्रीहरिकृष्ण, श्री सहाजनंद स्वामी श्री स्वामिनारायण, श्रीजी महाराज हम सभी के तथा अनंत कोटी जीवों के तारणहार हैं तथा अभयपद अर्थात् मोक्ष को देने वाले हैं।

जब तक इस पृथ्वी पर मनुष्यरुप धारण करके रहे तब तक अनेकों जीवों को अपने प्रत्यक्ष रहने का सर्वविधसुख दिये अन्तर्ध्यान होने के बाद भी अपने शरीर पर उपयोग की वस्तुओं को प्रसाद के रुप में देकर गये तथा आज्ञा करके गये कि इनके माध्यम् से दृढ निष्ठा वाला व्यक्ति अवश्य इहलौकिक तथा परलौकिक सुख को प्राप्त करता रहेगा।

जो अक्षरधाम के अधिपति थे वही यहाँ, जो यहाँ वही अक्षरधाम में। आज भी द्विभुजरुप धारण किये हुये प्रत्येक मंदिरो में दर्शन का लाभ दे रहे हैं। अब आप कहें ईश्वर कैसे हैं ? इसका यथार्थ उत्तर प्राप्त करना हो तो धर्मवंशी आचार्य द्वारा मंत्रदीक्षा लेनी ही पड़ेगी। परमेश्वर की लीला चरित्र वाले शास्त्रों का चिंतन करना पड़ेगा। संतो का साहचर्य करना पड़ेगा। मूल गादी संस्थान द्वारा प्रतिष्ठित मंदिरो में प्रभु का दर्शन करना पडेगा, तभी आपको मन में उठने वाले सारे प्रश्नो का समाधान अपने आप हो जायेगा।

"जेम हीरे करीने जे हीरो वेंधाय बीजा वते नथी वेंधातो। इसी तरह भगवान का निश्चय भी भगवान द्वारा संभव है। अने भगवाननुं दर्शन पण भगवान वते ज थाय छे ? (ग.प्र. ५१) हीरा की तरह स्वयं परमेश्वर आकर परमेश्वर का अर्थात् अपना ज्ञान कराते हैं। जो अक्षरधाम की मूर्ति है। वही मूर्ति आज भी सर्वत्र विराजमान है। जिसका हम सभी दर्शन का लाभ ले रहे हैं।

हमें तो मात्र "हमारे भगवान स्वामिनारायण ही परमेश्वर है उन्हें ही प्राप्त करना है, उन्हीं से हमारा कल्याण संभव है, उनकी प्रति मूर्ति आचार्य महाराज द्वारा कल्याण संभव है, इस प्रकार की भावना को दृढ करना है। इस प्रकार की समझ निरंतर मन में रखकर श्रीहरि के चरित्र रुपी माला में गुथ जाना चाहिये।

पेज नं. ७ से आगे

## विधवा कुं स्पर्शत नहीं करत, न आत्मघात

आत्मघात तीर्थ में भी नहीं करना चाहिये, क्रोधमें भी नहीं करना चाहिये, अयोग्य आचरण हो गया हो तो भी आत्मघात नहीं करना चाहिये। जहर खाकर, गले में फांसी लगाकर, कूंए में गिरकर पर्वत से गिरकर इत्यादि किसी भी प्रकार से आत्मघात नहीं करना चाहिये।

धर्मशास्त्र में अकाल मृत्यु के प्रकरण में कहा गया है कि आत्महत्या से जीव पतित हो जाता है। ब्रह्मपुराण में लिखा है कि, जो क्रोधके कारण, अन्न न खाने का जो व्रत लिया हो, विष खाकर, अग्नि में गिरकर जो मनुष्य अपनी शरीर का नाश करता है वह नराधम महापातकी तथा पतित कहा गया है। अयोग्य आचरण करके भी आत्महत्या नहीं करनी चाहिये। आत्महत्या करने से रौरब नामक नरक की प्राप्ति होती है। अयोग्य आचरण के कारण यदि मुंह दिखाने लायक न हो तो उस स्थान को छोड़ देना चाहिये लेकिन आत्महत्या नहीं करना चाहिये। देश, काल, वय, शक्ति के अनुसार धर्मशास्त्र में कहे अनुसार युग धर्म के अनुसार प्रायश्चित करना न्याय है। लेकिन आत्महत्या तो भूलकर भी नहीं करनी चाहिये।

# सत्संग बालपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## कलौ केशव कीर्तनात्

- शा. हरिप्रियदासजी ( गांधीनगर )

पुराणों में लिखा है कि अन्य युग में ( सतयुगमें ) हजारो वर्ष तक तप करने का जो फल है तथा त्रेता-इत्यादि युगों में बड़े-बड़े राजसूय यज्ञ, अश्वमेधयज्ञ इत्यादि का जो फल है वह कलियुग में केवल भगवान की भक्ति-कीर्तन से प्राप्त होता है। जिससे मन निर्मल होता है। चित्त प्रभु के स्वरुप में स्थिर होता है। बुद्धि निश्चय वाली होती है। नंद-संत कहते कि भगवान में मन न हो तो कीर्तन गाने से क्या फायदा । श्रीजी महाराज कहते हैं कि हम जब गोलोक गये तो वहाँ भी मुक्तानंद स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी के गीत गाये जाते हैं। नवधाभक्ति में कीर्तन भक्ति ठाकुरजी का हृदय है। प्रेमानंद स्वामी जब कीर्तन गाते तब प्रभु स्वयं उनके पास पहुंचजाते थे। एकाग्र मन करके गाने से प्रभु पद की प्राप्ति होती है। नारदजी भगवान के पास वैकुंठधाम गये वहाँ प्रभु नहीं मिले तो नारदजीने पूछा प्रभु आप कहां रहते हो तब प्रभुने कहा कि "जहाँ मेरे भक्त एकत्रित होकर मेरा कीर्तन करते हैं मैं वहाँ रहता हूँ।"

कच्छ के दो भक्त-मूलजी तता कृष्णजी दोनो एक ही साथ साधु हो गये। दोनो श्रीहरि के पास पहुँच गये। प्रभु ने कहा आप दोनो कौन हो ? आप का साधु हूँ। नाम क्या है ? नाम तो मिथ्या हैं। श्रीहरि ने कहा बड़े गवर्नर होकर आये, यहाँ से चले जाइये। दोनो को भगा दिया। यह परमात्मा की कसौटी थी।

दोनो गढपुर घेला नदी के किनारे जाकर बैठ गये। उधर प्रभु दरबारगढ में विराजमान हैं। फिर भी प्रभु को नींद नहीं आ रही थी। अपने पार्षद को उन दोनो के पास भेंजे और कहे कि जाकर कह दो कि यहाँ से भी कहीं और दूर चले जाइये। दोनो ने कहा अब मैं यहाँ से कहीं नही जाऊँगा। पार्षद आकर प्रभु से कहा कि वे यहाँ से नहीं जाने की बात कह रहे हैं। प्रभु ने पार्षद से कहा जाकर बुला लाओ। पार्षद बुलाकर ले आया प्रभु दोनो को गले लगालिये और सदा के लिये अपने पास रख लिये । प्रभु कीर्तन भक्ति के वश में हैं। जब प्रभु अन्तर्ध्यान हो गये तब ब्रह्मानंद स्वामी जूनागढ से गढडा पहुँचे, तब तक अन्तिम विधिपूर्ण हो चुकी थी। ब्रह्मानंद स्वामी श्रीहरि का वियोग सहन नहीं कर पाये तो गोपीनाथजी महाराज के सामने गीत गाने लगे "प्राण स्नेही घर आवो अब वियरा, हियरा धीर धरत नहीं मेरा।" इस गीत को गाते समय श्रीहरि उस मूर्ति में से निकल कर स्वामी को गले लगा लिये।

महाराज को कीर्तन भक्ति अतिशय प्रिय है। इसीलिये तो प्रभु ने कहा है कि ब्रहमानदं स्वामी के १०० कीर्तन को जो गायेगा उसे हम अवश्य दर्धन देंगे। भगवान के भक्त को कम से कम ५ पांच कीर्तन तो अवश्य आना चारिये। वह भी कंठस्थ होना आवश्यक।

कितने बालक फिल्मी गीत गाते हैं। वह आपके जीव को लेने वाला होगा। अवकाश के दिन नंद-संतो के गीत ही सिखाने का प्रयाश उत्तम कहा जायेगा। इससे प्रभु प्रसन्न होंगे। उन संतो की वाणी में अन्दर की भक्ति का उद्‌गार है। जिन्हें हम कीर्तन के रुप में गाते हैं। उसका गान करने से भगवान तथा भक्त के अन्तर का भेद खत्म हो जाता है।

•

## सबसे बड़ा सद्‌गुण निर्मलता

- साधु श्रीरंगदास ( गांधीनगर )

"मुरलियां कौन महा तप कीनो" एक वांस के टुकड़े छेद करो और वह वांसुरी हो जायेगी। "मुरली" शब्द सुनते ही श्रीकृष्ण महाप्रभु की याद आ जाती है। वृंदावन में जब गाय चराते थे, उस समय मुरली बजाते थे। रासोत्सव करने के लिये कोई नगारा की आवश्यकता नहीं होती थी। केवल मुरली की नांद सुनकर गोपियां हाजिर हो जाती थी। आने के बाद वे मन को प्रभु में

अर्पण करके मात्र तन लेकर वापस जाती थी । वह मुरली कौन सा तप की थी कि उसे भगवान के मुख पर स्थान मिला ।

यह विचार किसी को आवे या न आवे लेकिन एक नगारा को अवश्य आया । एक दिन ऐसा आया जब कृष्ण जन्माष्टमी की तैयारी चल रही थी, नाना प्रकार के उपकरण सजाने के लिये लाये जा रहे थे । किसी ने एक बांसुरी लाकर दे दिया, उस बांसुरी को मंदिर में एक बड़े नगारे के पास रख दिया गया । नगारा उस बांसुरी से कहने लगा अरे बांसुरी । तूं कितनी भाग्यसाली हो तूं भगवान के मुख अर्थात् मुख्य स्थान को प्राप्त की है । जब कि मैं कितना अभागा हूँ कि जब कोई मंदिर में आता है तब डंडे से जोर जोर पीटने लगता है । जब कि तूं किसी को कुछ देती नहीं हो और मैं किसी का कुछ लेता नहीं हूँ । फिर भी मुझे मारखाना पड़ता है । नगारा का यह प्रश्न विचारने लायक है । मुरली यह सुनर हंसने लगी । नगारा ने कहा मुझ पर तु भी हंस रही हो । तब मुरली ने कहा अरे भाई, तूं मुझे देंख मुझ मे कितने छिद्र हैं । वे सभी छिद्र खुले हुये हैं । जिसका हृदय खुला हुआ है, साफ है, निर्मल है वही भगवान के यहाँ पहुँच सकता है। आपकी पोल तो ढंकी हुई है । भीतर सब खाली ऊपर ढंका हुआ । आप अपने दोष को ढंक कर रखते हैं, यद्यपि मेरा जीवन खुले पन्ने की तरह है । आप से भगवान इसीलिये दूर है । इसी तरह जो भी अपने दोषों को ढंककर रखेगा उससे भगवान दूर रहेंगे ।

इसलिये सर्वना सद्‌गुणों की ही पूजा होती है । आदर होता है । निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

गुण पुजावे सबे भक्त में, गुण बढावत मान ।
ज्यां मे जे तो गुण रहे, ताहि ते तो सन्मान ॥
अवगुण कुं आदर नहीं, शुभ गुण कुं सन्मान ।
होय विधएह देख हुं, जानत है सब जान ॥

**श्री स्वामिनारायण मासिक के जो नये आजीवन सभ्य बनेंगे उन्हें सुंदर उपहार मिलेंगे**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से अपने प.भ. हार्दिककुमार दशरथभाई पटेल ( वडुवाले अभी ओस्ट्रेलिया ) की तरफ से श्री स्वामिनारायण मासिक के जो अब नये सभ्य बनेंगे उन्हें शिक्षापत्री नित्य नियम के साथ वजनदार पुस्तिका भेट दी जायेगी । नोट: जो नये आजीवन सभ्य बनेंगे उन्हें ही भेट दी जायेगी ।

## अहमदाबाद मंदिर में परंपरागत समूह शारदा पूजन

श्रीजी महाराज के सभी सुज्ञ प्रिय हरिभक्तों को सहर्ष ज्ञान करना है कि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से विद्वान पंडितो द्वारा अहमदाबाद मंदिर की प्रसादी के सभा मंडप में आश्विन कृष्ण-१४ ता. ५-११-२०१० शुक्रवार को सायंकाल ६-०० बजे समूह शारदा पूजन वेद विधिपुरस्सर धूमधाम के साथ संपन्न होगा । शारदा पूजन में लाभ लेने वाले धर्मप्रेमी व्यापारी अपने खाता वही की संख्या व नाम पता-फोन लिखकर लाल कपड़े में बांधकर कोठार की आफिस में जमा करके पक्की रसीद अवश्य लें ।

खातावही स्वीकारने की अंतिम ता. ३-११-२०१० है । बाद में स्वीकार नहीं किया जायेगा । - कोठारी स्वामी

**श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट**

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५ • राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १८-४५ • शयन आरती २०-३०

# भक्तिसुधा

### शाश्वत सुख एक मात्र भगवान में है

- सां.यो. चंपाबा (अहमदाबाद-हवेली)

सारे जगत के मनुष्यो में एकमात्र सुख की चाहना रहती है। मनुष्य की सभी क्रिया सुख के लिये होती है। सुखी होने के लिये मनुष्य गाड़ी की शोधकी, बंगला बनाया, फोन-फर्नीचर, फिक्स डीपोजिट की व्यवस्था की। सुख के लिये पानी की जहाज हवाई जहाज की शोधकी, सुख के लिये बाग-बगीचे बनवाये। सुख के लिये स्त्री-पुत्र या पद-प्रतिष्ठा की चाहना किया और सबकुछ प्राप्त भी किया, फिर भी सुख नहीं मिला। कही न कहीं कुछ न कुछ रह ही जाता है। उसकी चाहना का अन्त नहीं होता।

श्रीहरि ने व.ग.अं. ३९ में कहा है कि भगवान ने जीवों को पांच प्रकार के विषय का सुख दिया है। वह सुख कैसा है ? पंच विषय का सुख आभासमात्र है। भगवान तो सभी सुख के साधन हैं। दिव्य सुख की प्राप्ति करनी हो या अक्षरधाम की प्राप्ति करनी हो तो प्रभु की शरणागति आवश्यक है। पंचविषय का सुख तो जैसे कुत्ते को रोटी डाली हो वैसा है।

वचनामृत में दो प्रकार के सुख बताये हैं। सामान्य सुख तथा नित्य सुख। सामान्य सुख जैसे कोई रोगी बार-बार दवा खाता रहे ठीक हो पुनः विमार पड़े पुनः दवाखाये। नित्य सुख ऐसी दवा ( स्थायी ) दवा खाये कि पुनः रोग से मुक्ति हो जाय। इसी तरह सामान्य सुख जागतिक सुख है। विशिष्ट ( नित्य ) सुख भगवान की शरणागति में है। यह सभी अपने हाथ में है - सोचने का अवसर भी अपने हाथ में है।

एक वृद्धा मां रास्ते में कुछ खोज रही थीं। उसी समय वहाँ से एक वटोही निकला उसने पूछा माताजी आप क्या खोज रही है, माताजीने कहा मेरी अंगुठी गिर गयी है। उसे खोज रही हूँ, यह सुनकर वह राही भी खोजने लगा। जब हाथ में कुछ नहीं आया तो राहीने पूछा मांजी वह अंगुठी कहाँ गिरी थी। तब माताजीने बताया कि उस सामने वाले अंधकार में गिरी है। यह सुनकर राहीने कहा मां जब उस अंधकार में गिरी है तो यहाँ क्यो खोजरही हैं। वृद्धा मां ने कहा कि यहाँ प्रकाश है इस लिये यहाँ खोज रही हूँ। इस वृद्धा से हम सभी की मूर्खता कम नहीं है।

हम सभी आंख में तेल डालकर सुख खोज रहे हैं। इसलिये सुख की प्राप्ति संभव नहीं। इसका कारण यह कि सुख कहीं है खोज कहीं रहे है। शास्वत सुख सांसार के विषयजाल से कभी संभव नहीं है। शाश्वत सुख तो परमात्मा के चरण शरण में है।

रेती को पीसने से कभी तेल नहीं निकलता। पानी का मन्थन करने से मक्खन नहीं निकलता। सांसारिक सुख से शाश्वत सुख नहीं मिल सकता। चाहे कितना गाड़ी-बंगला-संपत्ति, बैभव-प्रतिष्ठा हो ये सुख के साधन नहीं हो सकते।

इसलिये भगवान एक मात्र सुख के शास्वत साधन है। वही सबसे बड़ा भाग्यशाली होता है - जिस में भगवत् प्रेम है। संसार में भटकते रहने से जगत का सुख भले मिले, लेकिन पारलौकिक सुख के लिये भक्ति, भजन, ध्यान, धारणा ईश्वरोपासना श्रेयष्कर है।

•

### सत्संग का फल

- सोनु जे. पटेल (अहमदाबाद)

सत्शास्त्रो में सत्संग की महिमा का खूब वर्णन मिलता है। जिसमें एक दृष्टांत देते हैं -

एक समय विश्वामित्र के यहाँ वशिष्ट पधारे। विश्वामित्र उनका अच्छा संमान किये। कुछ समय तक उनके आश्रम में ठहरे। बाद में अपने आश्रम में जाने के लिए कहे। विश्वामित्र उन्हें कुछ दूर तक छोड़ने गये। अतिथ्य भेंट में विश्वामित्र ने वशिष्ट को एक हजार वर्ष के तप का फल भेंट में दिया। इसी तरह विश्वामित्र वशिष्ठ के

यहाँ गये। विश्वामित्र की बिदाई के समय वशिष्ठने अपने एक घड़ी सत्संग का फल भेंट में दिया। इससे विश्वामित्र ने अपना अपमान समझा। वे मन में विचार करने लगे, इस रहस्य को वशिष्ठजी समझ गये और पूछे भी, क्यो मुनिवर्य आपके आतिथ्य में कुछ कमी रह गयी क्या ? उन्होंने कहा हाँ, आपने मुझे एक घड़ी मात्र सत्संग का फल दिया, उससे मैं अपना अपमान समझता हूँ। वशिष्ठजी ने कहा आप सत्संग के महत्व को नहीं जानते इस लिये ऐसा आप कह रहे हैं। सत्संग फल के सामने आपका एक हजार वर्ष तप का फल कुछ भी नहीं है। विश्वामित्र वशिष्ठजी की बात सुनकर बहुत क्रोधित हो गयो और कहने लगे कि आप को इसका प्रमाण देना पड़ेगा। दोनो एक साथ ब्रह्माजी के पास गये अपनी बात ब्रह्माजी को बताये ब्रह्माजी रहस्य जान गये कि इन दोनो मुनियों के झगड़े से अच्छा है कि इन्हें भगवान विष्णु के पास भेंज दे। ऐसा ही वे किये, उन्होंने कहा अभी मैं जगत रचना में व्यस्त हूँ, समय कम है, आप दोनो भगवान विष्णु के पास जायें वे दोनो भगवान विष्णु के पास गये, भगवान विष्णु ने भी रहस्य समझकर भगवान शिव के पास भेंजा। वे भी शेष भगवान के पास भेंजे। शेष भगवानने तीनो जगह से उत्तर न मिलने का रहस्य समझकर कहा कि आप दोनो एक काम करो मैं इस समय पृथ्वी के भार से दबा हूँ, आप दोनों में से कोई थोड़ा भार हल्का कर दे तो मैं फुरसत में होजाऊ फिर आप दोनो का समाधान कर सकूं। यह सुनकर विश्वामित्र अपने एक हजार वर्ष के तप के प्रभाव से शेष भगवान का भार हल्का करना चाहे, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। बाद में वशिष्ठजी अपने सत्संग के एक घड़ी के बल से पृथ्वी को ऊपर होने का संकल्प किया कि तुरंत पृथ्वी एक हाथ ऊपर हो गयी। शेष भगवान दोनों की तरफ मुस्कराते हुये देखे और कहे कि अब तो आप दोनों को उत्तर मिल गया होगा। विश्वामित्र वशिष्ठ के चरण में गिर कर क्षमा मांगे और कहने लगे कि व्यर्थ में ही मैने आपको परेशान किया।

जप, तप, दान, यज्ञ, इत्यादि की अपेक्षा सत्संग उत्तम है। इसीलिये स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में तथा शिक्षापत्री में सत्संग के महत्व को बताया है। इसी पर तुलसीदाजीने लिखा है -

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आधि।
तुलसी संगति साधु की कटै कोटि अपराध॥

पूर्वजन्म के पुण्य उदय होने पर ही व्यक्ति का मन सत्संग में लगता है। सत्संग की कोई तुलना ही नहीं है।

●

### अन्न से मन में परिवर्तन हो सकता है

- परमार भानुबहन भगवानजीभाई (बोलका-हालार)

अपने संप्रदाय में एक घटना हुई है, एक सत्संग की पुत्री विवाहित होकर ससुराल गयी। वहाँ के लोग संप्रदाय के आश्रित नहीं थे। वह बहन अपने साथ शिक्षापत्री, प्रभु की मूर्ति, गले में कंठी, इत्यादि के साथ ससुराल गयी। वहाँ पहुंचने के साथ ससुरालवाले सब कुछ तोड़ ताड़ कर फेंक दिये। और कहने लगे कि यह सब कुछ वृद्धावस्था में शोभा देता है, अभी मौजमस्ती करने का समय है। वह दुःखी तो हुई लेकिन कुछ बोल नहीं सकी।

कुछ समय के बाद जब अपने पिता के घर गयी तो सबकुछ आपवीती बताई। उसी समय मंदिर में संत पधारे हुये थे। लड़की का भाई मंदिर में जाकर अपनी बहन की सभी बातें स्वामी से कही, स्वामीने कहा तुम अपने बहन से जाकर कहना इस बार जब ससुराल जाय तो भोजन बनाते समय स्वामिनारायण स्वामिनारायण बोलते हुये बनावे, बाद में उसी भोजन को अपने पति को प्रसाद के रुप में भोजन करने के लिये दे, बाद में भगवान सब कुछ अच्छा कर देंगे।

पवित्र अन्न में कितनी शक्ति है कि ऐसा करने से उस परिवार में परिवर्तन आया। उसका पति स्वयं पूछने लगा कि जब विवाहित हो कर आई थी तब तुम्हारी कंठी, शिक्षापत्री तथा अन्य सभी तोड़ फोड़ कर भेंक दिया था,

उससे कुछ दुःख नहीं हुआ ? उसने कहा मैं तो आपकी पत्नी हूँ, आप जैसे रखेंगे वैसे मैं रहूँगी । पति कहने लगा कि मुझसे गलती हो गयी है । जो तुम्हारे पास भगवान की सामग्री थी वह होनी चाहिये मुझे पश्चाताप हो रहा है । कहाँ मिलेगी तुम बताओं हम लादेंगे । उस बहन ने बताया कि बगल के गाँव में स्वामिनारायण मंदिर है वहाँ कंठी तथा शिक्षापत्री पूजा की सभी सामान मिल जायेगी । वह भाई दौड़ते हुये उस मंदिर में गया । वहाँ जाकर स्वामी से पूजा की पेटी, कंठी, शिक्षापत्री ले आया । इतना ही नहीं उस सन्त के प्रभाव से खुद कंठी पहन कर आया और सत्संगी बन गया । यह शुद्ध आहार तथा भगवान के नाम का प्रभाव है ।

●

### आप तो पुरुषोत्तम नारायण है

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

एक बार श्रीहरि मेधपुर पधारे । जहाँ आज मंदिर है वहाँ नारण सोनी का मकान था, उसी में प्रभु निवास किये । वहीं पर संत-हरिभक्तों की एक सभा किये । सभा में महाराज समाधिकी बात करते हुये समाधिकरवाये । उसी समय लाड़कीबाई को भी समाधिलग गयी और वे अक्षरधाम में अक्षराधिपति भगवान का दर्शन की । वहीं पर महाराज से कहने लगी कि अब मैं विवाह नहीं करुंगी। महाराजने कहा, यदि लोग जबरदस्ती से विवाह करें तो ? उसने कहा मैं प्राणघात कर दूंगी लेकिन विवाह नहीं करुंगी । इस तरह प्रभु के साथ वात करके अपने शरीर से समाधिके द्वारा अपना प्राण निकालना चाही लेकिन प्रभु उसे कंठ तक आने के बाद रोक दिये । जहाँ का तहाँ वह प्राण रुका रह गया । बाद में श्रीहरिने उसे समझाया कि, तुम्हारा स्वरुप तो तेरी आत्मा है । पर देह आत्मा नहीं है । आत्मा अच्छेद्य अभेद्य है । आत्मा कभी मरता नहीं । शरीर मरण धर्मा है । बाद में महाराजने उसके हृदय में वापस किया । उस महिला को शांति का अनुभव होने लगा । उस महिला को यह आभास हो गया कि यही पुरुषोत्तम नारायण हैं । अब वह अपने को प्रभु के चरणों में समर्पित हो गयी । प्रभु ने भी उसे कह दिया कि तुम सां.यो. होकर भजन भक्ति करो । वह लाडकीबाई जब तक जीवित रही तब तक ब्रह्मचर्य पालन की और लोगों को इसकी प्रेरणा भी देती रही ।

**नये व्रत उत्सव के निर्णय में सुधार के विषय में**

श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद, मूली तथा भूज मंदिर तथा सभी विदेश के मंदिर में गत वर्ष के व्रतउत्सव के निर्णय में पायेउत्सव निधिअथवा फोन नंबर यदि कोई सुधार हुआ होनो आगामी वर्ष के नये निर्णय में पाटोत्सव का समय, फोन नंबर आदि सुधार प्राप्त करे या "श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय" श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नाम से तात्कालिक भेज दे ।

## लेखको की विज्ञप्ति

श्री स्वामिनारायण मासिक के लिए लेखों को भेजते समय लेखों को इतना ध्यान में रखकर लेखों भेजे ।

- लेख की कोपी के साथ शब्द कोरा के अनुसार शुद्ध लिखावट में भेंजे ।
- संप्रदाय के सिद्धांत तथा मर्यादा अनुसार भेंजे तथा अन्य कोई की उतारा हुआ अथवा कहीं और प्रकाशित लेख को उतारकर न भेंजे । अगर इस प्रकार का कोई लेख छपाना है तो उसकी संपूर्ण जवाबदारी लेखक की रहेगी ।
- लेख के अक्षर सुवाक्य होने चाहिए ।
- अंग्रेजी या संस्कृत श्लोक शुद्ध तथा चुवाच्य होय उस प्रकार अर्थ के साथ शुद्ध-स्वच्छ होने चाहिए ।
- लेख छोटा तथा सूचन होना चाहिए ।

# सत्संग समाचार

### अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में परंपरागत जलझीलणी का उत्सव

भाद्रपद कृष्ण-११ ता. १९-९-२०१० रविवार को सांम्प्रदायिक परंपरा के अनुसार श्री गणपतिजी की रथयात्रा दोपहर में १-४५ बजे श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल उत्सवी मंडल के साथ प्रस्थान की थी। मंदिर के चौक में उत्सव का नजारा देखने को मिला। इस प्रसंग पर श्री नरनारायण उत्सवी मंडल, संत मंडल में अहमदाबाद के महंत स्वामी नारायणघाट के महंत स्वामी, महंत छोटे पी.पी. स्वामी, पुजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी, शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी, भंडारी स्वामी, योगी स्वामी, जे. के. स्वामी, मुनि स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदासजी, पुराणी धर्मजीवनदासजी, इत्यादि संत पार्षद मंडल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, श्रीजी सेवा मंडल तथा बाहर से आये हुए एवं शहर के हरिभक्त, इस उत्सव में सामिल हुये थे। इस उत्सव में ठाकुरजीकी सुवर्णमयी तीनो पालकियो में ठाकुरजी का दर्शन हो रहा था। यह उत्सव यात्रा नारायणघाट तक गयी थी। वहाँ पर भी धुन-कीर्तन करके सायंकाल ६ बजे श्री नरनारायणदेव मंदिर वापस आयी थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संत मंडल एवं उत्सवी मंडल करीब ८ बजे धुन करते हुये मंदिर में प्रवेश किया था। इलोक्ट्रोनिक मीडिया का अपना दूरदर्शन, ई.टी.वी. तथा इन्डिया टी.वी. की कैमरा टीमने उत्सव का सुन्दर दर्शन का रुप देकर गुजरात की धार्मिक जनता को दर्शन करवाया था। इस प्रसंग पर कोठारी दिगम्बर भगतने सुंदर व्यवस्था की थी। - शा. मुनि स्वामी

### श्री स्वामिनारायण मदिर कांकरिया श्रीमद् भागवत पारायण

कांकरिया की पावन भूमिपर श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से एवं वयोवृद्ध संत शा.स्वा. माधवप्रसाददासजी तथा जेतलपुर के विद्वान कथाकार प.पू.स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा यहाँ के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी, आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से बाल स्वरुप कष्टभंजनदेव के सानिध्य में ता. १२-८-१० से ता. १८-८-१० तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण श्री विनोदभाई छगनलाल गांधी तथा पलिसीबहन विनोदभाई गांधी ( शिकागो ) की तरफ से हुआ था। इस कथा के वक्ता शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी गुरु पू. पी.पी. स्वामी ( जेतलपुर ) तथा शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी ( कांकरिया ) थे। सभी को अपनी अमृतमयी वाणी का सभी को लाभ दिये थे।

इस प्रसंग पर संत हरिभक्तों को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। हरिभक्त कथा-श्रवण के साथ झूले के दर्शन का लाभ लिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथो से महापूजा की पूर्णाहुति हुई थी। संतो के प्रेरक प्रवचन के बाद प.पू. महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

यहाँ पर श्रावण मास में ठाकुरजी को विविधझूलों को अलंकृत करके जुलाया गया था। इस प्रसंग पर सुन्दर उत्सव का आयोजन किया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस प्रसंग पर पधारे थे। २ घन्टे तक इस धुन में विराजमान थे। उत्सवी मंडल को पूज्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। बाद में ठाकुरजी सन्ध्या की आरती उतारकर दिव्य लाभ दिया था। - पा. नरोत्तम भगत, कांकरिया

### श्री स्वामिनारायण मंदिर जमियतपुरा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों से पवित्र जमीयतपुरा गाँव में पूज्य पी.पी. स्वामी ( जेतलपुरधाम ) की प्रेरणा से तथा अपने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के ट्रस्टी श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल की देखरेख में सुंदर मंदिर का निर्माण हुआ था। जिसकी प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य महाराज के वरद् हाथों से हुई थी। यहाँ पवित्र श्रावण महीने में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा हरिभक्तो के साथ से तथा पूजारी शा.स्वामी छपैयाप्रसाददासजी की प्रेरणा से भव्य झूलोत्सव दि. २८-७-१० को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ था। इसके यजमान प.भ. साधुरामभाई

रहे थे प.भ. दशरथभाई पटेल ( ट्रस्टीश्री ) तथा गाँव के हरिभक्तो ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का धामधूम से स्वागत किया था । पश्चात जेतलपुर मंदिर से पधारे पूज्य पी.पी. स्वामी, माणसा महंत घनश्याम स्वामी इत्यादि ने खूब सुंदर प्रवचन किया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद दिए थे सभी हरिभक्तो ने दर्शन का दिव्य लाभ प्राप्त किया था।

- कोठारी हिंमतभाई

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा**

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चातुर्मास में कथा करने पधारे शा.स्वा. केशवचरणदासजी तथा उनके शिष्य घनश्याम स्वामीने श्रावण महीने में श्रीमद् सत्संगिभूषण की सुंदर कथा की थी। कथा में घनश्याम जन्मोत्सव धामधूम से मनाया गया था। प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से चलने वाले बाल मंडल की प्रश्ननोत्तरी, कीर्तन स्पर्धा, चित्र स्पर्धा जैसे सुंदर कार्यक्रम सभी को प्रसन्न किया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की थी।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

**श्री स्वामिनारायण मंदिर वसई (डाभला)**

यहाँ मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण महीने में ठाकुरजी का झूलोत्सव किया गया था। हरिभक्तो धुन कथावार्ता भी श्रावण महिने में किये थे। हरिभक्तो ने दर्शन का लाभ लिया था।- भूपेशभाई भावसार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर झुलासण**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ श्रावण शुक्ल-८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर बालकृष्ण को अलग-अलग झूलो में झुलाया था । भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रागट्य से अंतर्ध्यान तक लीला प्रदर्शन आयोजित हुआ था। भक्त दर्शन करके धन्य हुए थे। सम्रग कार्य कोठारीश्री तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर रुप से किया था। - कोठारीश्री

**श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा अहमदाबाद**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मवंशी के आशीर्वाद तथा आज्ञा से तथा महंत शा.स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रावण महीने में स.गु. स्वामी निष्कुलानंद स्वामी रचित भक्तचिंतामणी के परचा प्रकरणकी पंचदिनात्मक कथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी ( अहमदाबाद ) के वक्तापद पर हुई थी। हरिभक्त खूब प्रसन्न हुए थे । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन मंदिर में बालस्वरुप घनश्याम महाराज के पुजारी ऋषिकेश स्वामीने सुंदर शृंगार किया था। रात १२ बजे धामधूम से जन्मोत्सव मनाया गया था। यजमान परिवार के साथ अपने मंदिर के ट्रस्टी प.भ. दशरथभाई पटेल तथा प.भ. रतिभाई पटेल ने आरती उतारकर दिव्य लाभ लिया था । श्रीनरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर कीर्तन भक्ति की थी। समग्र व्यवस्था कोठारी स्वामी चंद्रप्रकाशदासजीने की थी। - वैभव भगत

**बायड स्टेशन श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मवंश के आशीर्वाद से यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण महीने में दि. ५-९-१० से दि. ११-९-१० पर्यंत श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी ने की थी । हरिभक्तोने कथामृत का लाभ लेकर धन्य हुए थे। पूर्णाहुति के अवसर पर कोठारी डाह्याभाई तथा कनुभाई पटेल ने भगवान की लीला पर प्रवचन किया था।

**श्री स्वामिनारायण मंदिर पूना (महाराष्ट्र)**

यहाँ हरिभक्तोने ६ बस के द्वारा लोनावाला में सत्संग सभा का आयोजन हुआ था। जिसमें सर्वप्रथम श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक विधिवत हुआ था। कोठारी निर्लेप स्वामीने कथावार्ता की थी हरिभक्तो ने सारे दिन यहाँ कथामृतपान धून कीर्तन भजन किया था। - भरतभाई

**हिंमतनगर में बहनो की महापूजा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अगले प्रागट्योत्सव महोत्सव ( इडर मंदिर-साबरकांठा ) के उपलक्ष्य में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा आशीर्वाद से हिंमतनगर घनश्याम महिला सत्संग मंडल के लाभुबहन, कंचनबहन और शांताबहन के मार्गदर्शन के मुताबिक ऋषि पंचमी को समूह महापूजा विधिवत् हुई थी। जिस में ९० बहनोने लाभ लिया था।

पश्चात् अहमदाबाद वचनामृत ८ पर स्पर्धा आयोजित हुई थी। जिस में प्रथम भावनाबहन प्रजापति और दूसरे नंबर पर देव्यानी बहन पटेल और तीसरे नंबर पर कंचनबहन पोरीया

रही थी।

राधाष्टमी के दिन यहाँ के महंत स्वामी शा. हरिजीवनदासजीने उनके मंदिर में सभा का आयोजन किया था। जिसमें कथा-वार्ता, धून, आरती कर ठाकुरजी को थाल धराया था। - लक्ष्मीबहन पोरीया

**श्रावण महिने में जीवराजपार्क मंदिर में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण**

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से यहाँ मंदिर में दि. ४-९-१० से दि. १०-९-१० पर्यंत श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने सुमधुर कंठ में हुआ। इसके मुख्य यजमान अ.नि. प.भ. दयारामभाई गोगजीभाई ठक्कर परिवारने (खेंगारीया अभी जीवराजपार्क) लाभ लिया था।

इस कथा के दौरान प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी तथा बहनो को दर्शन का सुख दिया था। दि. ९-९-१० को भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद दिए थे। पारायण की समाप्ति के अवसर पर दि. १०-९-१० को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे और आशीर्वाद देकर खूब प्रसन्न हुए थे। यहाँ मंदिर के ट्रस्टी मंडल ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सेवा लिखवाई थी।

सभा संचालन श्री भरतभाई ठक्करने किया था। पूर्णाहुति के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी आदि संतने पधारकर दिव्य लाभ दिया था।

- नरनारायाणदेव युवक मंडल, जीवराजपार्क

**श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पुजारी पार्षद जसुभगत की प्रेरणा से भाद्रपद शुक्ल-९ को सुबह ७ से शाम के ७ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून भाई तथा बहनो ने मिलकर किया था। जलझीलणी एकादशी को गांव के हरिभक्त प्रसादी के जुलूस के साथ तालाब का जल लेने गये थे। तथा दि. २०-१०-१० को पटेल जोईताराम त्रिभोवनदासके चि. सुरेशभाई की तरफ से अपने मंदिर में हरिभक्तो को रसोई तथा ठाकुरजी को थाल चढाया था।

- योगेशभाई भगाभाई

## मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

**श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली**

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के समक्ष श्रावण मास में चांदी का दिव्य झूला बनाकर, उस में श्रीहरिकृष्ण महाराज को रखकर झुलाया गया था। सायंकाल ब्रह्मानंद सभा मंडप में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धकी कथा की गयी थी। संत-हरिभक्त कथा श्रवण करके आनंद का अनुभव किये थे।

**श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव**

परंपरा के अनुसार वर्षों से जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जाता है। सायंकाल ५-३० बजे अहमदाबाद से श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू. बड़े महाराजश्री संत-पार्षदों के साथ पधारे थे। स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी सभा मंडप में अपने सिंहासन पर विराजमान हुये थे। मूली के महंत स्वामी ने पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था। बाद में पू. वयोवृद्ध संत स्वामी बालकृष्णदासजी, स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, राम स्वामी (धांगध्रा) इत्यादि संत पुष्पहार इत्यादि से पू.महाराजश्री का स्वागत किये थे। मूली मंदिर के ट्रस्टी मंडल तथा अग्रगण्य हरिभक्त पू.महाराजश्री की आरती उतारे थे। प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, शा. हरिॐप्रकाश स्वामी, स्वा. जगतप्रकाश स्वामी, कृष्णवल्लभ स्वामी, भक्तवत्सल स्वामी तथा महंत नारायणप्रसाद स्वामीने उत्सव की महिमा समझाकर आगामी श्री स्वामिनारायण म्युझियम की रुपरेखा समझाकर तन, मन, धन से सेवा करने का आह्वान किया।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सुन्दर दृष्टांत देकर बड़े आनंद के साथ हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभा संचालन शा. हरिप्रकाशदासजीने किया था।

अन्य संतो में कांकरिया के आनंद स्वामी, मुनि स्वामी ( महंत स्वा. के शिष्य ) जेतलपुर के वी.पी. स्वामी, गढपुर से माधव स्वामी तथा नरोत्तम भगत इत्यादि पधारे हुये थे । को. स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने सुंदर व्यवस्था की थी । प.पू. बड़े महाराजश्री ने श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की सायंकालीन आरती उतारकर दिव्य लाभ दिया था।

- नवलदान गढवी

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल (भाल)**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से मूली श्री राधाकृष्णदेव देशान्तर्गत स.गु. देवानंद स्वामी की जन्म भूमि बलोल के श्री स्वामिनारायण मंदिर में स्वामी के अन्तर्ध्यान के पुण्य तिथि के अवसर पर श्रावण कृष्ण-१० के दिन नवावाडज के करीब ३५ जितने हरिभक्त कीर्तन-भजन का सुन्दर लाभ दिये थे। - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, जसुभाई

# विदेश सत्संग समाचार

**नेशविल टेनशी अमेरिका**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आर्शीवाद से यहाँ का सत्संग अच्छा चल रहा है। मूल संप्रदाय के श्री नरनारायणदेव के आश्रित श्री मधुबहन आर. पटेल के नूतन मकान में ९ जुलाई को उनके विशेष आग्रह पर लक्ष्मी स्वरुपा प.पू. बड़ी गादीवालाजी यहां पधारी थी । यहाँपर १० जुलाई को प.पू. बड़ी गादीवालाजी की उपस्थिति में सभा का आयोजन किया गया था । जिस में दूर-दूर से ( कुछवील, मेम्फीस, कंटुकी, क्रोसवील इत्यादि शहर से ) १५० जितने सत्संगी बहने दर्शन-आशीर्वाद का लाभ लेने पधारी थी । सत्संगी बहनो का उत्साह तथा प्रेम देखकर प.पू. बड़ी गादीवालाश्रीने यहाँ भव्य तथा सुंदर मंदिर बनेगा ऐसा दिव्य संकल्प करके आशीर्वाद दी थीं । प.पू. बड़ी गादीवालाश्री के सानिध्य में कई नए मुमुक्षु भी बने थे ।

-नीता पटेल

**श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड (अमेरिका)**

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड ओहायो में सत्संगी बहनों के प्रेमपूर्वक आमंत्रण पर २७ जुलाई २०१० के दिन लक्ष्मीस्वरुपा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी।

२८ जुलाई को मंदिर में बहनो की विशाल सत्संग सभा हुई थी । जिसमें कई बहनों ने सुंदर मधुर कंठ से नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन गाये थे । अंत में समस्त बहनो को बड़ी गादीवाला ने दिव्य आशीर्वाद दिया था ।

**शिकागो इलीनोईस श्री स्वामिनारायण मंदिर**

२९ जुलाई २०१० के दिन प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री कलिवलेन्ड से बहनों को भावपूर्ण विदाई देकर शिकागो मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग में पधारी थी । ३० तथा ३१ जुलाई को पाटोत्सव प्रसंग के उपलक्ष में सांयकाल की कथा में पधारी थी । तथा बहनों को दर्शन-आशीर्वाद का महा अलौकिक लाभ दिया था । १ अगस्त २०१० के दिन हमारे मंदिर में ठाकुरजी का महाभिषेक तथा अन्नकूट का दर्शन करके बहनों को भावपूर्ण आशीर्वाद देकर न्युजर्सी पधारी थी।

- अर्पिता पटेल

**श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (अमेरिका)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी कृष्णदासजी की प्रेरणा से आषाढ कृष्णपक्ष-२ को रथयात्रा उत्सव धूमधाम से मनाया गया । ठाकुरजी के रथ को मंदिर में स्थापित करके भव्य आरती उतारकर रथयात्रा उत्सव मनाया गया था।

आषाढ कृष्णपक्ष-२ गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके तस्वीर का पूजन अर्चन करके सभी ने गुरुपुर्णिमा का महोत्सव मनाया था।

जेतलपुर मंदिर में पूनम के दिन पदयात्रा का जो माहात्म्य है उसी के कारण कई हरिभक्त दूर-दूर रहते हुये भी प्रतापी देव के दर्शन करने पूनम के दिन चलकर आते हैं । श्री राधाकृष्ण हरिकृष्ण महाराज उन का संकल्प भी पूर्ण करते हैं।

प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा स्थापित देव प्रत्यक्ष तथा

चमत्कारी हैं उसका साक्षात् अनुभव दर्शनार्थियो को भी मिला है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ सत्संग की वृद्धि अच्छी हुई है।- रमेशभाई पटेल

**आई.एस.एस.ओ., यु.एस.ए. पियोरिया चेप्टर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से आई.एस.एस.ओ. नये चेप्टर वियोरिया में दर रविवार को नियमित सत्संग सभा चलती है। गुरु पूर्णिमा के पर्व पर वडताल निवासी प.पू. आचार्य श्री राकेशप्रसादजी महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे।

हमारे इस नये चेप्टर में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से सत्संगियों में श्री नरनारायणदेव गद्दी की निष्ठा अधिक है।

-रमेशभाई पटेल

**श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्रीकी आज्ञा से श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया २४ जुलाई शनिवार को गुरु पूर्णिमा महोत्सव यहाँ के महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा स्वा. हरिनंदनदासजी की प्रेरणा से धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा, श्री सौम्यकुमार तथा श्री सुव्रतकुमार तथा हजूरी पार्षद वनराज भगत साथ पधारे थे।

इस विशेष सत्संग सभा में कीर्तन, भक्ति, धुन, भजन, समूह में हुए थे। मुख्य यजमान तथा सह यजमान परिवार द्वारा बहनो के विभाग में प.पू.बड़ी गादीवालाश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन प्रथम महंत स्वामीने उसके बाद हरिभक्तोने पूजन का लाभ लिया था। महंत स्वामीने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री एक मात्र हमारे गुरु है, पूजन-अर्चन एक मात्र उन्ही का होना चाहिये हमारे गुरु ही मोक्षदाता तथा कल्याणकारी है। इस प्रकार गुरु की सुंदर महिमा-समझाकर-ज्ञान प्रदान किया था। उन्होंने कहा कि ऐसे सुंदर-अवसर पर धर्मवंशी धर्मकुल की प.पू. बड़ी गादीवालाश्री इस सभा में बिराजमान हैं। बहनो के लिए तो सोने का सूर्य उदित हुआ है। इस प्रकार सुंदर उपदेश प्रदान किया था।

**पाँचवा पाटोत्सव मनाया गया**

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का पांचवा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. बड़ी गादीवालाजी, पू. बिन्दुराजा, श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार तथा ब्रह्मनिष्ठ संत पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) पू. शा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) पू. शा. श्रीजी स्वामी (नारणपुरा) कोलोनिया मंदिर के महंत धर्मवल्लभदासजी, हरिनंदन स्वामी, चेरीहील मंदिर के महंत स्वामी, न्युजर्सी के महंत स्वामी, सेवक वनराज भगत इत्यादि संत-पार्षद की उपस्थिति में २८ अगस्त शनिवार को वनविचरण की कथा शा.स्वामी श्रीजीप्रकाशने की थी। ता. २९ अगस्त रविवार प्रातः काल मंदिर के प्रांगण में हवन के यजमान तथा पाटोत्सव के यजमान पूर्णाहुति में भाग लिये थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया था। यज्ञ विधिपिनाकिनभाई जानीने करवाई थी। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा ब्रह्मनिष्ठ संतो का पूजन अर्चन हरिभक्तों ने किया था। संतो की प्रेरकवाणी के बाद पूज्य बड़े महाराजश्री ने तथा पूज्य बडी गादीवालाने बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। -प्रविणभाई शाह

**शिकागो इलीनोईस श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्रावण मास का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

प.पू. बड़े महाराजश्री के आगमन पर यहाँ के संत हरिभक्तों ने गाजे बाजे के साथ स्वागत किया था। साथ में श्री नरनारायणदेव के पुजारी स्वा. राजेश्वरानंदजी भी थे। ठाकुरजी का दर्शन करके पू. बड़े महाराजश्री सभा में पधारे थे। सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। हरिभक्तो ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये भेंट दिया था।

श्रावण मास के अंतिम सोमवार को समूह में महादेव का पूजन किया गया था।

जलझीलणी एकादशी के दिन भगवान गणेश के

विसर्जन प्रसंग पर उत्सव मनाया गया था । महंत स्वा. जयप्रकाशदासजी तथा शा. हरिप्रसाददासजी एवं श्रीजीप्रकाशदासजी का विदाई समारंभ मनाया गया था । नूतन महंत धर्मवल्लभदासजी तथा हरिनंदनदासजी का सुंदर स्वागत किया गया था। - वसंत त्रिवेदी शिकागो

**टोरोन्टो श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वितीय पाटोत्सव**

श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर ७ अगस्त शनिवार को मारुति यज्ञ का आयोजन किया गया था । जिसकी विधिविरलभाई महेताने करवायी थी । सायंकाल पोथीयात्रा निकाली गयी थी । सत्यस्वरुप स्वामीने सुन्दर कथा की थी।

आठ अगस्त को ठाकुरजी का पाटोत्सव मनाया गया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने फोन पर हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । आशीर्वाद में सभी को प्रगति के साथ स्वस्थ रहने को कहा साथ में प्रतिदिन मंदिर जाकर भक्ति करने की भी आज्ञा दी थी । प.पू. बड़े महाराजश्रीने इमेल द्वारा जो पत्र आशीर्वादात्मक प्रेषित किया था, उसका सभा में पठन किया गया था । कार्यक्रम की पूर्णाहुति के बाद हरिभक्तों को भोजन करवाया गया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है। - श्री न.ना.यु. मंडल टोरोन्टो

## अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

**मोरवासण :** श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण के ट्रस्टी तथा श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान श्री प्रवीणभाई पटेल के पिताजी श्री शंकरभाई वेणीदास पटेल भाद्रपद शुक्लपक्ष-११ ता. १९-९-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**देउसणा (वर्तमान अमेरिका) :** श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान हरिभक्त तथा उत्तर गुजरात के सत्संग के स्तम्भ समान श्री गोकल बापा श्रावण कृष्ण अमावास्या ता. ८-९-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**दोलासणा-वासणा :** श्री बलदेवभाई भीखाभाई चौधरी तथा जीवणभाई चौधरी श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**अहमदाबाद-मेमनगर :** श्री व्रजेशभाई जयंतीभाई पटेल ( धरमपुर खाखरियावाला ) के पुत्र छोटी उम्र में ता. २६-८-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**वसई डाभला :** श्री कौशिकभाई दुर्लभदास भावसार ता. ८-८-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**मरवारवाड :** श्रीमती हीराबहन छगनभाई चौधरी ता. ४-९-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**वहेलाल :** विष्णुभाई अंबालाल पटेल ता. १९-९-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

**विहार :** नाथीबहन मंगलदास पटेल ता. १७-९-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**अहमदाबाद :** श्री विपुलभाई रावजी की माताजी श्रीमती मधुबहन रावजीभाई ता. ५-७-२०१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।




( १ ) ધ્રાંગધ્રા ( घांचीवाड ) बहनो के मंदिर में झूलेपर प्रभु का दर्शन ।( २ ) श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण में श्री कृष्णजन्मोत्सव दर्शन ।( ३ ) जमीयतपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मांस में ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।( ४ ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली जन्माष्टमी के उत्सव प्रसंग पर श्री राधाकृष्ण देव की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।( ५ ) प.पू. बड़े महाराजश्री को श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये प्रसादी का काष्टपीठ अर्पण करते हुये श्री दयारामभाई जादव परिवार ( जोरावरनगर ) ( ६ ) बोस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में वामन अवतार तथा फूल के श्रृंगार में श्री घनश्याम महाराज ।( ७ ) सुरेन्द्रनगर मध्यस्थ सेन्ट्रल जेल में कैदियों को सदुपदेश देते हुये को. कृष्णवल्लभ स्वामी तथा साथ में हाजी यूसुफमीया एवं जेलर साहबजी ।( ८ ) श्री राजेशभाई विठ्ठलभाई शाह के महर्षी लेबल्स प्रा.लि. को भारत के राष्ट्रपति द्वारा मा. मंत्रीश्री दिनशा पटेल एप्रिसेशन एवोर्ड अर्पण करते हुये ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

• ॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

## ઐતિહાસિક નગર ઈડરધામને આંગણે સર્વ પ્રથમ
## શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનના સાતમાં વંશજ
# શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય
# શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો











# તા. ૧૭-૧૦-૨૦૧૦ રવિવાર (વિજ્યાદશમી)

સમગ્ર મહોત્સવનું લાઈવ પ્રસારણ : www.swaminarayan.in

જન્મોત્સવનું શુભ સ્થળ

શ્રી સ્વામિનારાયણનગર શ્રીજી બાયોસીડ્સ, જી.ઈ.બી.ની બાજુમાં, ઈડર, લાલોડા રોડ, જી. સાબરકાંઠા.

આયોજક : સ.ગુ. મહંત સ્વામી જગદીશપ્રસાદદાસજી તથા સાબરકાંઠા સત્સંગ સમાજ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર ઈડર, દરબારગઢ પાસે, ફોન : (૦૨૭૭૮) ૨૫૦૩૬૪, મો. ૯૮૭૯૩૭૦૪૫૭

Museum Year
March 2010 - March 2011

shree swaminarayan mandir

ઇ.સ. ૨૦૧૦-૧૧ का वर्ष "म्युजियम वर्ष"

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી की आज्ञा से मार्च २०११ वर्ष "म्युजियम वर्ष" के रुप में प्रकाशित किया जाता है।

## उद्घाटन ७मी मार्च २०११

संवत २०६७ फागुनसुद तीज श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org